प्राचीन भारतीय दर्शन

वैदिक एवं औपनिषद् विश्व-दृष्टि

→ दर्शन शब्द संस्कृत के दृश् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - "जिसके द्वारा देखा जाये" अर्थात् 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' या जिसके द्वारा देखा जाय वह दर्शन है। या दर्शन वह अन्तर्चक्षु है जिसके माध्यम से तत्व के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है।

→ 'दृष्टं इति दर्शनम्' अर्थात् जिसे देखते हैं वह दर्शन है, से तात्पर्य तत्वदर्शन से है। तत्व ब्रह्म है अतः दर्शन का लक्ष्य ब्रह्मज्ञान या मोक्ष है।

→ राधाकृष्णन् के शब्दों में 'परमसत्ता' के साथ साक्षात्कार करने का ही दूसरा नाम दर्शन है।

ईशावास्योपनिषद् में दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा गया है! —

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये ॥ (मंत्र-15)

अर्थात -

सत्य का मुख स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है। [illegible] है पूषण! देवता इसे अनावृत्त कर सत्य को प्रकाशित करें। अतः दर्शन सत्य को प्रकाशित करने का माध्यम है।

→ महर्षि गौतम के अनुसार -

युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने का माध्यम दर्शन है।

→ भारतीय मत में कहा जा सकता है - "हमारी सभी प्रकार की अनुभूतियों की युक्तिसंगत व्याख्या कर वास्तविकता का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना दार्शनिक चिन्तन का उद्देश्य है।"

अनुभूतियाँ दो प्रकार की होती है! —

(i) ऐन्द्रिय (Sensuous) — 5 ज्ञानेन्द्रिय
(ii) अतीन्द्रिय (Non Sensuous) — मन

→ 'सत्य' या वास्तविकता का ज्ञान अतीन्द्रिय अनुभूति से प्राप्त होता है।
अतीन्द्रिय/ आध्यात्मिक अनुभूति

→ भारतीय मत में 'दर्शन' शब्द का अर्थ ही है साक्षात देखना अर्थात् परम तत्व का साक्षात्कार या अपरोक्षानुभव।

Scanned with Oken Scanner

→ साक्षात्कार के ये साधन है - श्रुति और तर्क।
"आत्मा को जानो" (आत्मानं विद्धि) यह भारतीय दर्शन का उद्घोष है।
→ त्रिविध दुःख (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) की निवृत्ति तथा अक्षय आनन्द की प्राप्ति भारतीय दर्शन का लक्ष्य है।
→ श्रवण, मनन, तथा निदिध्यासन इस लक्ष्य प्राप्ति के त्रिविध साधन है।

* अंग्रेजी में दर्शन शब्द के लिए 'फिलॉसोफी' (PHILOSOPHY) शब्द का प्रयोग किया जाता है।
→ फिलॉसोफी ... दो ग्रीक शब्द से बना है -
फिलॉस (Philos) - प्रेम (Love)
सोफिया (Sophia) - ज्ञान (Wisdom)
→ ज्ञान के प्रति प्रेम (Love for wisdom) फिलॉसोफी है।
or
विद्या प्रेम / सरस्वती / विद्या देवी / ज्ञान के प्रति अनुराग।

→ पाश्चात्य मत में - दर्शन मनुष्य का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयत्न है जिसके द्वारा वह विश्व को उसकी सम्पूर्णता में समझने की चेष्टा करता है।
दर्शन की इस परिभाषा से इसके तीन प्रमुख विशेषता सामने आता है: —
1. निष्पक्षता
2. बौद्धिकता और
3. सम्पूर्णता

→ कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों ने दर्शन को अपने शब्दों में व्यक्त किया है: —

→ सुकरात — दर्शन अपने-आपको जानने का माध्यम है।
(know the self)
→ प्लेटो - दर्शन वे तत्व के मूल स्वरूप का अन्वेषण होता है।
→ अरस्तू - दर्शन वे परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की खोज होती है।
→ हीगेल - दर्शन वास्तविकता का तत्वज्ञान है।

Scanned with Oken Scanner

→ हर्बर्ट स्पेन्सर - दर्शन का सम्बन्ध प्रत्येक वस्तु से है।

→ बर्ट्रेण्ड रसेल - दर्शन विज्ञानों के आधारों का तार्किक अध्ययन है।

→ कान्ट - दर्शन आलोचनात्मक परीक्षण है।

* पाश्चात्य दृष्टि में दर्शन बौद्धिक ज्ञान है जबकि भारतीय दर्शन में दर्शन ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान है।

→ सुकरात - ज्ञान ही सद्गुण है।

→ बेंथम - अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख अपेक्षित है।

→ मिल - सन्तुष्ट सूकर की अपेक्षा असन्तुष्ट सुकरात अच्छा है।

→ हीगेल - कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है।

→ ब्रैडले - अपना स्थान और उसका कर्तव्य

→ कान्ट - सदिच्छा ही शुभ है।

→ कान्ट - कर्तव्य के लिए कर्तव्य आवश्यक है।

Scanned with Oken Scanner

* दर्शन के विभाग

दर्शन के मुख्य तीन विभाग है: —

1. तत्वमीमांसा (Metaphysics)
2. ज्ञानमीमांसा (Epistemology)
3. नीतिमीमांसा (Ethics)

तत्वमीमांसा, दर्शन की वह शाखा जिसके अन्तर्गत मूल तत्व क्या है? उसकी संख्या क्या है. एवं उसका स्वरूप क्या है आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है वह तत्वमीमांसा कहलाता है। इस संदर्भ में चार उत्तर सामने आते है: —

1. मूल तत्व भौतिक है (Material)
2. मूल तत्व आध्यात्मिक है या चेतन है (Spiritual)
3. मूल तत्व भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों है
4. मूल तत्व न भौतिक है न आध्यात्मिक है, बल्कि दोनों से विलक्षण है।

इन चारों मत को क्रमशः —
भौतिकवाद, (Materialism)
प्रत्ययवाद (Idealism)
द्वैतवाद (Dualism)
अनुभयवाद (Neutralism)

→ मूल तत्व की संख्या को लेकर तीन मत है —

1. मूल तत्व एक है (एकवाद - Monism)
2. मूल तत्व दो है (द्वैतवाद Dualism)
3. मूल तत्व अनेक है (अनेकवाद Pluralism)

→ इस मत को मानने वालों मे क्रमशः — स्पिनोजा, देकार्त एवं लाइबनित्ज का नाम आता है।

→ भारतीय दर्शन में क्रमशः शंकराचार्य, अद्वैतवेदान्त, सांख्य एवं जैन, विशिष्टाद्वैत तथा मीमांसा दर्शन का नाम आता है।

भौतिकवाद (Materialism) वह दार्शनिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार विश्व का मूल आधार मूर्त (Matter) या जड़ तत्व है। इसी भौतिक मूल से विश्व के नाना पदार्थों की उत्पत्ति होती है।

भौतिकवाद के कुछ सामान्य गुण या विशेषता है –

→ विस्तारपूर्ण
→ देशकाल में फैलना
→ अचेतन
→ अनीश्वरवादी
→ वस्तुवादी
→ यंत्रवादी

→ भौतिकवाद को मानने वालों में प्रमुख रूप है – थेलिज (जल) एनेक्जिमेण्डर (अपरिमीत / अपरिमेय), एनेक्जिमेनीज (वायु) हेराक्लाइटस (अग्नि) एम्पेडाक्लस (चार परमाणु → पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि) ल्युकिप्पस (परमाणु) प्रमुख रूप से आते हैं। भारतीय दर्शन में एक मात्र चार्वाक भौतिकवादी है।

→ Metaphysics शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम – एन्ड्रोनिकस (Andronicus) ने किया।

→ ontology शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सी. वुल्फ (C. Wolff) ने किया।

→ Metaphysics and ontology दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है।

Scanned with Oken Scanner

→ अध्यात्मवाद या प्रत्ययवाद (Idealism)

अध्यात्मवाद भौतिकवाद का विरोधी सिद्धांत है। अध्यात्मवाद मानता है कि मूल सत्ता चेतन स्वरूप या अध्यात्म-स्वरूप है और सब कुछ उसी का परिणाम है। या तो उसकी अभिव्यक्ति है। इसे ही प्रत्यय (Idea), आत्मा (Self) या मन (Mind) भी कहा जाता है।

→ मूल तत्व आध्यात्मिक होने से तत्वतः सारा विश्व ही आध्यात्मिक या चिदात्मक अर्थात् अभौतिक है। यदि कोई पदार्थ भौतिक लगता है तो वह प्रतीति (Appearance) मात्र है, वास्तविक नहीं। प्रत्ययवाद का दावा है कि जो भौतिक जान पड़ता है वह भी प्रत्यात्मक (of the nature of Ideas) है, आत्मा या मन का विकार है।

→ प्रत्ययवाद की प्रमुख विशेषता ——
- → अप्रकृतिवादी
- → ईश्वरवादी
- → प्रयोजनवादी

→ पाश्चात्य प्रत्ययवाद के तीन रूप होते हैं: ——

(1) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism) - बर्कले
भारतीय मत में - बौद्ध का योगाचार मत

(2) वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद (Objective Idealism) - प्लेटो

(3) निरपेक्ष प्रत्ययवाद (Absolute Idealism) - हेगेल
भारतीय मत में शंकर का अद्वैतवाद

* द्वैतवाद -
इस मत के अनुसार मूल तत्व जड़ और चेतन दोनों हैं। इस मत को मानने वालों में भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन इसके उदाहरण है तथा पाश्चात्य दर्शन में देकार्त का दर्शन इसका प्रमुख उदाहरण है।

* अनुभयवाद - इसके अनुसार मूल तत्व की प्रकृति को न जड़, न चेतन बल्कि दोनों से भिन्न अनुभय (Neutral) मानता है। अनुभयवाद के प्रवर्तक विलियम जेम्स को माना जाता है। मैक और एवेनेरियस इसी मत को मानते हैं।

ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

दर्शन की जिस शाखा के अन्तर्गत ज्ञान क्या है? ज्ञान प्राप्ति के कितने साधन है आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है उसे प्रमाण विज्ञान या ज्ञानमीमांसा कहा जाता है।

भारतीय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर सभी सम्प्रदायों के बीच मतभेद है! ——

चार्वाक :- प्रत्यक्ष,
बौद्ध :- प्रत्यक्ष, अनुमान
वैशेषिक :- प्रत्यक्ष, अनुमान
सांख्य - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
योग :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
विशिष्टाद्वैत :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
जैन :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
न्याय :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान
मीमांसा (प्रभाकर) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति
मीमांसा (कुमारिल) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि/अभाव
वेदान्त :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि

→ अन्य वेदान्ती- संभव और ऐतिह्य को भी प्रमाण मानते हैं।

→ तान्त्रिक दार्शनिक चेष्टा को भी एक स्वतंत्र प्रमाण मानते हैं।

→ संभव प्रमाण - अनुमान के अन्तर्गत आता है जैसे- यह ज्ञान संभव हो जाता है कि जिनके पास सौ रुपया है, उनके पास पचास रु० भी होगा।

→ ऐतिह्य - यह शब्द प्रमाण के अन्तर्गत है वक्ता का नाम अज्ञात है, यह किंवदन्ती है- जैसे इस पेड़ में यक्ष रहता है।

→ ऐतिह्य का अर्थ है- परम्परा या पौराणिक उपदेश।

→ चेष्टा - यह अनुमान के अन्तर्गत आता है। जैसे- हाथ में इशारा करके (चेष्टा से) किसी वस्तु का ज्ञान कराना जैसे- यह ठीक है।

Scanned with Oken Scanner

पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर तीन सिद्धांत आते हैं: —

1. बुद्धिवाद (Rationalism)
   इसे मानने वालों में - देकार्त, स्पिनोजा, तथा लाइबनित्ज आते हैं।
2. अनुभववाद (Empiricism)
   इसे मानने वालों में लॉक, ह्यूम और बर्कले आते हैं।
3. समीक्षावाद (Criticism) इस
   इसे मानने वालों में प्रमुख रूप से - काण्ट आते हैं।

* बुद्धिवाद - यह ज्ञान-मीमांसीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा ही सकती है, किसी दूसरे साधन से नहीं। बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान अनिवार्य एवं सार्वभौम (Necessary & Universal) होता है। सार्वभौम होने का अर्थ है कि वह सभी देश और काल के पदार्थों के विषय में सत्य होता है, उसकी सत्यता किसी देश विशेष या काल विशेष तक सीमित नहीं है। तथा अनिवार्य का तात्पर्य है उसकी सत्यता का निवारण नहीं हो सकता। अतः उसका अपवाद या विपरीत सत्य नहीं हो सकता है। ये ज्ञान जन्मजात प्रत्यय/सहज प्रत्यय (Innate Idea) के द्वारा निगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* अनुभववाद - यह बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धांत है, इसके अनुसार जन्म के समय मानव मस्तिष्क साफ स्लेट और कागज के समान होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता है सभी ज्ञान इन्द्रिय अनुभव के द्वारा सत्य रूप में प्राप्त होते हैं। अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में सजीवता होती है तथा यह आगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* समीक्षावाद - ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में बुद्धिवाद एवं अनुभववाद दोनों को एकांगी मानता है और कहता है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्धि और अनुभव दोनों आवश्यक है, क्योंकि बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान में अनिवार्यता एवं सार्वभौमिकता होती है तथा अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में सजीवता होती है। ज्ञान के लिए दोनों आवश्यक है। अतः ज्ञान प्राप्ति में दोनों का समान योगदान है।